शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी काव्य में 'जल' के विविध रंग

डॉ. संगीता वर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
कमला नेहरू कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली, भारत

शोध संक्षेप

साहित्य में जल का महत्त्व अत्यंत प्राचीन है। जल संकट की समस्या जिस रूप में आज दिखाई देती है, वह प्राचीन काल में तो दृष्टिगत नहीं होती। जल के विभिन्न पर्यायवाची रूप अवश्य दिखाई देते हैं। जल आदिकाल से ही साहित्य में अपनी विशेष पहचान बनाए हुए है। विभिन्न ऋतुओं में पर्वों में, मनोरंजन में, उत्सव में, सामाजिक सरोकारो में, जीवन के विविध रंगों में जल के अनगिनत रूप दिखाई देते हैं। साहित्य और मनुष्य की संवेदनाओं का चोली-दामन का साथ है। मनुष्य जीवन में जल की प्रासंगिकता जैसी पहले थी वैसी ही आज भी है। प्रस्तुत शोध पत्र में साहित्य में 'जल' संबंधी विविध छटाओं पर प्रकाश डाला गया है।

भूमिका

जीवन के उद्भव और विकास में जल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन भारतीय साहित्य और आधुनिक विज्ञान में जीवन की उत्पत्ति जल से मानी गयी है। धरती का अधिकाँश हिस्सा जल से घिरा हुआ है। जल की प्रकृति बड़ी अजीब है। इसका अपना कोई आकार नहीं होता। इसे जिस पात्र में डालो वैसा आकार ग्रहण कर लेता है। इसका अपना कोई रंग नहीं है। वर्षा की रूप में जल खेतों की प्यास बुझाता है। जब यह वाचाल हो उठता है तो भयंकर बाढ़ के रूप में विनाश लाता है। जल में अनगिनत सौन्दर्य छिपा हुआ है। भारतीय चिंतकों और मनीषियों ने जल के सौन्दर्य को अनेक प्रकार से चित्रित किया है। प्राचीन से लेकर अर्वाचीन साहित्य में जल की विविध छटा को देखा जा सकता है। नदियों के किनारे दुनिया की संस्कृतियाँ पल्लवित-पुष्पित हुई हैं। हिंदी के साहित्यकारों ने जल को जीवन और प्रकृति से जोड़कर कभी प्रेम तो कभी दर्शन से महत्त्व स्थापित किया हैं। साहित्य के विभिन्न पड़ावों में इसकी छाया बिखरी हुई देखी जा सकती है। विशेष रूप से हिंदी कवियों ने जल में बिखरी हुई अनेक सौन्दर्य छटाओं का चित्रण किया है।

हिंदी साहित्य में जल संबंधी चित्रण

हिंदी साहित्य में जल संबंधी चित्रण प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से देखे जाते रहे हैं। आदिकालीन साहित्य में संदेश रासक के रचयिता अद्दहमाण को कौन भूल सकता है। जल संबंधी चित्रण में अद्दहमाण की रूचि, संस्कार, निरीक्षण, संवेदनशीलता देखते ही बनती है। हमारा देश प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से अनुपम है। कवि

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

यहाँ की ऋतुएँ, पर्वत श्रेणियां, वन, सागर, सागर तट, सरोवर, नदियाँ, तालाब, प्रकृति के विविध एवं अभिनव रूप सज्जा से अलंकृत कर उसे मोहक रूप प्रदान कर देते हैं। अद्दहमाण से पूर्व वैदिक काल को देखें तो ऋषि, मुनियों के उद्‌गार प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर हैं। इसी प्रकार अद्दहमाण का 'संदेश रासक' ऋतुओं के वर्णन विस्तार में परिपक्व काव्य है।

'संदेश रासक' के वर्षा वर्णन में उल्लेख है कि ग्रीष्म ऋतु में तो सूर्य अपनी किरणों के समूह से बहुत प्रचंडित था, किन्तु अब वर्षा ऋतु में आकाश से इतना पानी बरस रहा है कि वह नदियों और झीलों में नहीं समा पा रहा है। नदियाँ लगातार एक के बाद दूसरी से घने अंतर से उठती लहरों के कारण तरनी कठिन हो रही है। लहरों का फासला दूर-दूर न होकर पास-पास है अर्थात लगातार उठ रही है। नदियों में भँवरें उठने के कारण नदी को पार करना कठिन हो जाता है। वे कलकल करती हुई छलॉगे मारती हुई लहरों से लहराती हुई बह रही है। प्रवासी लोग जो देश के कोने-कोने में थे, वे वहीं रुक गए और लौटने का साहस नहीं कर पा रहे हैं। दूसरे जो लोग घरों में हैं वे भी अपना आवश्यक काम आ पड़ने पर नावों के द्‌वारा ही इधर-उधर जा रहे हैं। इसी प्रकार एक पद और विचारणीय है :

"पथहत्थिण किए पहिय पहिहिं पवहंतियह
पई पई पेसउ करलउ गयण खिबंतियह।"[1]

ग्रीष्म की तपती किरणों के संपर्क से बादलों से भरता पानी पोखरियों में नहीं समा रहा है। पोखरियों का पानी रास्ते पर आ गया है। रास्ते पर पानी आ जाने के कारण पथिकों ने जूते अपने हाथ में ले लिए हैं। पग-पग पर आसमान को जलाने वाली बिजली रास्ता दिखा रही हैं।

मैथिल कवि विद्‌यापति ने वर्षा वर्णन में प्रकृति चित्रण के अन्तर्गत विरहिणी नायिका पर उस वातावरण की प्रकृति के उद्दीपनकारी रूपों का चित्रण करते हुए परंपरा का ही अनुसरण किया है। उनकी संवेदनाशीलता और सूक्ष्म दृष्टि प्राकृतिक चित्रणों को सजीव बना देती है। नाद-सौंदर्य इन चित्रों को अधिक आकर्षक बना देता है। बादलों का गर्जन, बिजली की कड़क, मत्त मयूरों का नृत्य जहाँ एक ओर विरहिणी की व्यथा का वर्णन करते हैं वहीं दूसरी ओर पाठक को वर्षा ऋतु की भयंकर रात के वातावरण की अनुभूति जगाकर उसके ह्रदय में भी अपेक्षित भावों का संचार करते हैं।

"मेघमाल सय तड़ित लता जनि
हिरदय सेल दई गेल।
झंपि घर गरजति सन्त तए भुवन भरि बरसतिया।
कुलिस कत सत पात मुदित मयूर नाचत मानिया।
आजु हम पेखल कालिन्दीत फूले।'[2]

विद्‌यापति ने जल के सघन रूप, अंधेरी रात, वर्षा ऋतु, बिजली की चमक, मोर-दादुर की आवाज के साथ-साथ विरह व्याथा में डूबी असहाय विरहिणी की वेदना को चित्रित किया है। भक्तिकाल में कबीर का काव्यथ जल संबंधी तत्वा से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। भले ही रहस्यवाद के रूप में इसका प्रयोग हुआ है। फिर भी जीव जगत के साथ इसका अद्‌वितीय संबंध है :

पानी केरा बुदबुदा अस मानुस की जात।
एक दिन छिप जाएगा ज्यों तारा परभात।।

जैसे पानी के बुलबुले कुछ क्षण बाद नष्ट हो जाते हैं, उसी प्रकार यह मानव शरीर भी क्षणभंगुर है। प्रभात होते ही सारे तारे छिप जाते

हैं, उसी प्रकार यह देह भी एक दिन नष्ट हो जाएगी। इसी प्रकार अन्य स्थल दृष्टव्य हैं :

कबीर बादल प्रेम का हम पर बरसा आई।
अंतरि भीगी आतमा हरी भरी बनराई।।

प्रेम का बादल मेरे ऊपर बरस पड़ा, जिससे अंतरात्मा तक भीग गई। आसपास का पूरा परिवेश हरा-भरा हो गया। खुशहाल हो गया। यह प्रेम का अपूर्व प्रभाव है। हम उसी में क्यों नहीं समा जाते हैं। कबीर के अन्य दोहे भी देखने योग्य हैं :

जल में कुम्भ कुम्भ में जल बाहर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जलहिं समाना यह तथ्य कहयौ गयानी।।

कबीर सीप सामंद की रटे पियास पियास।
समुदहि निका करि गिने स्वादति बूँद की आस।।

सूरदास द्वारा प्रणीत 'भ्रमरगीत' में यमुना नदी का मानवीकरण कर दिया है। कवि ने जड़ प्रकृति पर मानवीय आचरण का प्रयोग किया है। सूरदास ने 'सूरदास प्रभु जो जमुनागति सो गति भई हमारी कहकर' यद्यपि गोपियों की व्यंजना की है तथापि शेष वर्णन के द्वारा यमुना को ज्वर से पीड़ित नारी के रूप में दर्शाया है। वह विरह ज्वर से काली हो गई है। उसकी तरंगे शरीर की तड़पन हैं, तट का बालू उपचार का चूर्ण है।

देखियत कालिंदी अति कारी
कहियो पथिक जाय हरि सों ज्यों भई विरह जुर-जारी।।
गिरि प्रजंक तैं गिरति
धरनि धंसिये तरंग तरफ तन भारी तट बारू
उपचार चूर जल पूर प्रस्वेद पनारी।।[3]

कवि सूरदास ने नेत्रों से अश्रु वर्षा का जल वर्षा के रूपक से भी बाँधा है। उसके माध्यम से जहाँ गोपियों के नेत्रों से अश्रु वर्षा का चित्र उपस्थित हो गया है वहीं वर्षा में होने वाली जल वर्षा का चित्र हमारे सामने प्रतिबिम्बित हो उठता है। अश्रुओं का नदी की बाढ़ से बांधा गया रूप हमारे नेत्रों के समक्ष नदी में बाढ़ आने का दृश्य उपस्थित कर देता है। इस छंद मात्र से बाढ़ युक्त नदी का वेग, तटों को गिराकर उन्हें बहा ले जाना, नाव का न चल पाना एवं तरंगों से वृक्षों को तोड़ना सभी दृश्य मानस में तैर जाते हैं :

तुम्हारे विरह ब्रजनाथ अहो प्रिय नयनन नदी बढ़ी।
लीने जात निमेष कूल दोउ ऐते मान चढी।
गोलक नव नौका न सकत चलिए स्याम सरकनि बढ़ी बरेति
उरध स्वानस समीर तरंगन तेज तिलक तरू तादति।।

इसी प्रकार तुलसीदास का ध्यान प्राचीन काल के पवित्र जल स्रोतों की ओर भी गया है। जल स्त्रोत उस समय आज की भांति प्रदूषित नहीं थे। निम्नांकित पंक्तियों में कवि ने तालाबों को सदगुणों का अथाह भण्डार बताया है :

समिटि समिटि जल भरिंहि तलाबा
जिमि सदगुण सज्जिन यदि आवा।

नदियों को, तालाबों को तुलसीदास ने सन्त के हृदय के समान पवित्र माना है :

सरिता सर निर्मल जल सोहा
सन्त हृदय जस गत मद मोहा।

रामचरितमानस में तुलसी ने काव्य के मूल तत्वों की व्याख्या सरोवर जैसे पुरउन तरंग विलास मणि सीप कमल समूह एवं जलचर जीव आदि के सहारे की है। काव्यों के धार्मिक रूपायन को सरयूए गंगा आदि के रूपकों द्वारा बताया गया है। इसी क्रम में मानस में सरोवर की कल्पेना भी उन्नित है। रूपक में हृदय को मानस बताया गया है, जिसमें श्रीराम एवं सीता का यश रूपी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अमृतके समान जन एकत्र है। राम की निर्गुण एवं निर्बाध महिमा उसकी गहराई है। पुष्यतताए दिव्य ताए अमृतमयता से परिपूर्ण सरोवर की यह कल्पधन अनुपम और दिव्य है। बालकांड के छत्तीसवाँ छंद दृष्टव्य है :

सुठि सुंदर संवाद बर बिरचे बुद्धि बिचारि।
तेउ ऐहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि।।

यह सरोवर और इसके चारों घाट नित्य और अलौकिक हैं। ये चार घाट हैं - भुशंडि-गरुड़ घाट, शिव- पार्वती घाट. याज्ञवल्क्य-भारद्वाज घाट और तुलसी-संत घाट। मानस की कथा मानों इन्हीं चार घाटों से प्रवाहित होती है। "एक प्रकार से ये चार पवित्र घाट जल को विकार विहीन करने पर भी बल देते हैं। जिस प्रकार से घाट पवित्र हैं। प्रत्यक्ष जगत में भी तुलसी साफ, स्वच्छ घाटों की निर्मिति पर बल देते हैं।"[4]

आधुनिक हिंदी साहित्य प्रकृति के रंग-बिरंगे रंगों में रंगा हुआ है। छायावादी कवि पंत का प्रकृति के प्रति असीम प्रेम है। अपनी जन्मभूमि कौसानी की हिम से ढकी पर्वत श्रेणियों को और उसके पदतल में बहती जलधारा के अनिन्द्य सौन्दर्य को घण्टों निहारा करते थे। 'पल्लव' काव्य संग्रह की प्रसिद्ध कविता 'वीचि विलास' में पंत ने जल की चंचल हिलोरों को बचपन की कोमल मुस्कुहराहट के समान बताया है। छायावादी कवि प्रकृति के सभी अंगों को प्राणवान समझते थे। उन्हें प्रकृति में सर्वत्र जीवन प्रतीत होता था। पंत के 'पल्लव' संग्रह में आवेग मुक्त आश्वस्ति नहीं दिखाई देती। उसमें उमड़न है, वर्षा की तरह कवि उस वर्षा को पक्षी बनकर नहीं भोगता बादल बनकर बहा देता है। कहने का तात्पर्य यह है कि पंत ने जल के महत्त्व को समझा है और जल की स्वाभाविक विशेषताओं को अपनी भावनाओं के तारों में सुकुमारता के साथ पिरोया है। आँसू, वीचि विलास, उच्छवास (सावन-भादों), मौन-निमंत्रण, बादल आदि कविताओं में जल के विविध रूप दिखाई देते हैं।

पंत की ही 'ग्राम्या' कृति में जल को स्वाभाविक रूप में दिखाया गया है। रहस्यमयी कविताओं की जगह पंत ने उस संग्रह में मानवीय भावना और करूणा को जगह दी है। 'ग्राम्या' की ग्रामश्री कविता का सौंदर्य देखिए :

"बालू के साँपों से अंकित
गंगा की सतरंगी खेती।
सुंदर लगती सरपट छाई
तट पर तरबूजों की खेती।"

पंत के 'ग्रीत-अगीत' संग्रह में युग परिस्थितियों से प्रेरित संकलित कवितायें हैं। इसी संग्रह में वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण को अपनी कविता का विषय बनाया है।

"दूषित वायु दूषित जल
कैसे हो जीवन मंगल।
क्षीण आयु क्षुब्ध पल
कैसे हो जन्म सफल।"

जयशंकर प्रसाद की सुप्रसिद्ध काव्य रचना 'कामायनी' का आरंभ ही जलप्लावन से होता है। जलप्लापवन भारतीय इतिहास की एक ऐसी प्राचीन घटना है, जिसने मनु को देवों से विलक्षण मानवों की एक भिन्न संस्कृति प्रतिष्ठित करने का अवसर दिया है। कामायनी के कथानक का आधार प्राचीन आख्यान है जिसके अनुसार सम्पूर्ण देव जाति प्रलय का शिकार हो जाती है। बहुत प्राचीन काल में पृथ्वी पर एक भयंकर जल प्लावन हुआ और उसने देव जाति का विध्वंस कर डाला। केवल मनु बचता है और फिर वह देवों के अतीत वैभव, भयानक विभीषिका को देखकर चिंतित होता है।

महादेवी वर्मा ने संवेदना को ह्रदय से अभिव्यक्ति दी है। उनकी कविता 'नीर भरी दुख की बदली' खासी लोकप्रिय है। दुख की तुलना नीर से करना अर्थात वे विरह के पथ पर प्रेम बरसाने वाली नीर भरी दुख की बदली की भाँति हैं। उनकी कविताओं में करूणा, संवेदना और दुख की अधिकता है। इसी प्रकार अश्रु नीर, विरह का जलजात जीवन, उर तिमिरमय घन तिमिरमय नये घन आदि कवितायें रहस्यवादी कवितायें होने के साथ-साथ छायावादी कविता को नया आयाम देती हुई जल की महत्ता को नया रूपरंग देती है।

निराला ने 'बादल राग' में जल की परिकल्पना अनूठे रूप में प्रस्तुत की है। बादल भयंकर मूसलधार वर्षा करते हैं और कठोर गर्जन के साथ आकाश में छा जाते हैं। इस गर्जन को सुनकर सारा संसार भयभीत हो जाता है। इस कविता की विशेषता इसमें है कि बादलों के इस गर्जन का प्रभाव निम्न वर्ग पर नहीं पड़ता, क्योंकि उन्हें पता है कि क्रांति से उनका कोई नुकसान नहीं होगा, अपितु उन्हें खोया हुआ अधिकार ही मिलेगा। छोटे पौधे हँसते हैं, क्योंकि इस क्रांति से जीवन प्राप्त करते हैं। पूँजीपति वर्ग ही इस क्रांति से प्रभावित होता है।

अरूण कमल नयी सदी के कवि हैं। उनके 2011 में प्रकाशित 'पचास कवितायें' संकलन में जीवधारा कविता जल की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह कविता संदेश देती है कि धरती पर जल रहेगा तभी मुनष्य जाति के साथ-साथ अन्य जीव-जन्तु भी रहेंगे। वर्षा होने पर न केवल मनुष्य अपितु अन्य जीव-जन्तु भी प्रसन्न हो जाते हैं।

प्रवासी हिंदी साहित्यकार तेजेन्द्र शर्मा का कविता संग्रह 'यह घर तुम्हारा है' संग्रह में संकलित 'टेम्स का पानी' कविता में टेम्स नदी की तुलना गंगा से की है। तेजेन्द्र शर्मा लंदन में रहकर भी गंगा नदी की पवित्रता को नहीं भूलते हैं। अपने देश का अपनत्व और गहराई से जुड़े रहने की भावना और दर्द दूसरे देश की चकाचौंध में धूमिल नहीं हो पाती है।

निष्कर्ष

अत: हिंदी साहित्य जल के विविध रूपों से तरंगायित है। कवियों की भाव सिंचित सम्पदा से फलित काव्य के विविध रूप जल की महत्ता को सिद्ध करते हैं। आदिकालीन साहित्यि से लेकर वर्तमान साहित्य तक जल की निर्मलता, प्रवाहमयता आदि पर बल दिया गया है। कभी प्रकृति से जोड़कर तो कभी विविध मानवीय भावों को संवलित कर कवियों ने जल को विशेषता प्रदान की है। विशेष रूप से जल सौंदर्य को मानवीय व्यववहार का महत्वपूर्ण उपादान बनाया गया है। मानवीय व्यवहार का प्रतिबिम्ब जल में परछाई के समान काव्य में उभारा गया प्रतीत होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 संदेश रासक, संकलन : हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 42, प्रकाशक : हिंदी ग्रन्थ रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड हीराबाग, बम्बई, 4, प्रथम संस्करण, 1960, epustkolya.com

2 विद्यापति पदावली, संकलन : श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी पुस्तक भंडार, लहेरियासराय (बिहार प्रान्त), epustkolya.com

3 विरह पदावली, सूरदास, hi.krishnakosh.org

4 रामचरितमानस का सौंदर्य तत्व, डॉ. कविश्वर ठाकुर, पृष्ठ 230 प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली 11002, प्रथम संस्करण 1994